उपसंहार

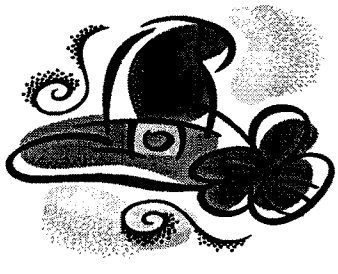

उपसंहार

हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में 'नाटक दृश्य' विधा एक ऐसी सशक्त विधा है, जो समाज का राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्तर पर यथार्थ रूप में चित्रण करने का माध्यम हैं। नाटककार भारतेन्दु जी ने अपने नाट्य साहित्य के माध्यम से देश में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना जागृत करने का महान कार्य किया है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध का विषय है - "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना" इस संदर्भ में जो अनुसंधानात्मक अध्ययन किया हैं उसका निचोड़ सार रूप में यहाँ देने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का संक्षिप्त रूप में जीवन परिचय और साहित्यिक कृतियों का विवेचन किया है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र का जन्म भाद्रपद विक्रम 6 सितम्बर, 1850 ई.को प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र काशी में हुआ था। भारतेन्दु के पिता उच्च कोटी के कवि थे। उनके संस्कारों और शिक्षा की धरोहर भारतेन्दु जी को मिली थी। माता-पिता के देहांत के बाद पाँच साल की उम्र से ही इस बालक को जीवन के उतार-चढ़ाव का डटकर सामना करना पड़ा। प्रारंभ में उनकी पढ़ाई घर पर ही हुई। उसके बाद वे बनारस के क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। परन्तु उन्हें ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा प्राप्त थी और तीव्र स्मरण शक्ती भी।उनके व्यक्तित्व के प्रमुख पहलुओं में देशप्रेम की ज्वाज्वल्य भावना, सहृदयता, स्वाभिमान, क्रांतिकारी विचारधारा,उद्‌बोधनकारी व्यक्तित्व तथा अन्याय व अत्याचार के प्रति विद्रोह करने की संघर्षशील एवं जुझारू वृत्ति, अनेक कठिनाइयों का सामना करने की साहसी वृत्ति आदि गुणों के कारण उनकी साहित्यिक रचनाओं की एक अलग सी पहचान बन गई। उनकी साहित्यिक रचनाओं ने पराधीनता के उस युग में लोगों के मन में देशप्रेम की भावना जगाकर अपने देश को पराधीनता की जंजीरों से आजाद करने के लिए राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना भर दी।

भारतेन्दु के व्यक्तित्व की छाप उनके कृतित्व में दिखाई देती है। उनके व्यक्तित्व में देशप्रेम, स्वाभिमान और सत्य वादिता कूट-कूटकर भरी थी। उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से समाज के विविध क्षेत्रों में जैसे राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों से समाज को सचेत करने का उल्लेखनीय कार्य किया हैं।

19 वीं शताब्दी में देश का वातावरण अंग्रेजों और मुसलमानों के आक्रमणों से इतना दूषित हुआ था कि, भारत की जनता एक अस्तित्वहीन, पराधीन जीवन व्यतीत कर रही थी। भारतेन्दु ने ऐसे अस्तित्वहीन समाज में देशप्रेम की भावना जगाकर उन्हें अपने अस्तित्व के लिए लड़ने के लिए प्रेरणा दी। उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाकर नवजागरण की प्रेरणा भर दी। जिससे समाज अपने अधिकारों के प्रति जागृत हुआ और स्वतंत्रता का अपना 'जन्म सिद्ध हक' प्राप्त करने के लिए इकठ्ठा होकर लढ़ने लगा। स्वातंत्रता प्राप्ति की ज्वलंत भावना भारतीय जनता में भर देने का महान कार्य इस श्रेष्ठ रचनाकार ने किया। इसलिए वे एक महान सचेत रचनाकार माने गये।

द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के 'भारत-दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों के कथ्य का अध्ययन किया गया है। जिसमें प्रथमत: कथ्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कथ्य की विशेषताएँ दी गई है। 'भारत दुर्दशा' नाटक में भारतेन्दु जी ने समाज के प्रति अपने दायित्व को समझकर तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक अनिष्ट प्रवृत्तियाँ, धार्मिक आडम्बर, भीषण दारिद्रय, भ्रष्ट राजनीति के कारण लोगों में फैली निराशा आदि को कथ्य के माध्यम से वर्णित किया है। अनेक विकृतियों से पथभ्रष्ट समाज को योग्य मार्ग दिखाकर, उनके जीवन में जो अज्ञान का अंधकार फैला था, उसे ज्ञान के प्रकाश द्वारा दूर करके लोगों में नई राष्ट्रीय चेतना निर्माण की। जिससे भारतीय जनमानस में अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता निर्माण होकर अपनी प्रगति करने का नया उत्साह और आत्मविश्वास निर्माण हो सके। परिणामस्वरूप उनमें राष्ट्र के प्रति ज्वाज्वल्य

देशाभिमान जागृत हो जाए। यही उद्देश्य 'भारत-दुर्दशा' नाटक का कथ्य साकार करने का रहा है। भारतेन्दु ने 'अंधेरनगरी' प्रहसन की रचना बिहार के किसी जमींदार के अन्याय को लक्षित करके की तथा तत्कालीन जमींदारों और राजाओं की निरंकुश अंधेरगर्दी तथा मूर्खता पर व्यंग्य करते हुए भारतवासियों को राष्ट्र कर्तव्य के प्रति सतर्क एवं जागरूक करते हुए उनमें राष्ट्रनिष्ठा, राष्ट्रीय अस्मिता व देशप्रेम की भावना को बढ़ावा देने का महान कार्य किया है।

इस प्रहसन में लोभ तथा विवेकहीनता के दुष्परिणामों की ओर व्यंग्यात्मक विनोदपूर्ण ढंग से संकेत करके समाज को उससे जागृत करने का कार्य किया है। राजाओं का शोखपन, मन की चंचलता एवं विलासी वृत्ति के कारण राज्य में धर्म, न्याय और सत्य की रक्षा न होकर अधर्म, अन्याय और असत्य का ही समर्थन किया जा रहा था। उन्हीं कुप्रवृत्तियों के खिलाफ जनता विद्रोह की आवाज बुलंद करे इसलिए भारतेन्दु जी ने नाटक जैसी दृश्यात्मक विधा को अपनाया है। उन्होंने निश्चित ही आलसी-निष्क्रिय जनता के मन पर प्रभावी असर निर्माण करने का प्रशंसात्मक प्रयास किया था। यह प्रस्तुत कथ्य से स्पष्ट होता है।

अत: स्पष्ट होता है कि, प्रस्तुत नाटकों के निर्माण के कई उद्देश्य है - "देशभक्ति, अतीत का गौरवगान, वर्तमान के प्रति क्षोभ, तत्कालीन भ्रष्ट शासन प्रबंध से असंतोष की भावना, अपनी भाषा, संस्कृति और धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा एवं निष्ठा, राष्ट्रीय चेतना की प्रेरक भावना इन्हें जगाना आदि प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं तथा तत्कालीन कष्टमय परिस्थितियों का वर्णन करना आदि।

'कथ्य' के संगठन में नाटक के प्रमुख पात्र, प्रतीक पात्र, वर्ग पात्र और गौण पात्र इनका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। क्योंकि इन पात्रों के माध्यम से देश की जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्तर पर दयनीय अवस्था हुई थी व सांस्कृतिक मूल्यों का जो ऱ्हास हुआ था उसे स्पष्ट करने में यह समस्त पात्र सार्थक सिद्ध हुए हैं। पात्रों के संवाद सार्थक है। ग्रामीण जनता की बोलीभाषा का हिस्सा होने से

स्वाभाविक बने हैं। सामान्य लोगों के भी समझ में आनेवाले ये संवाद गति और प्रसंगों से मार्मिक बनें हैं तथा कथा संगठन में पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ विश्लेषित करने में सक्षम सिद्ध हुए हैं।

प्रस्तुत नाटकों के निर्माण के मूल में भारतेन्दु का मुख्य उद्देश्य यह था कि, समाज में व्याप्त कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, तत्कालीन समाज में फैली हुई गरीबी, भ्रष्ट प्रशासन जन्य असंतोष तथा जनहताशा इन्हें अभिव्यक्ति मिले। अपने पथभ्रष्ट समाज को प्रगति की सही दिशा मिल जाए व उसमें राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना निर्माण हो जाए। उन्हें सिर्फ इस बात की अभिलाषा थी कि, देश अपनी दयनीय अवस्था से उभरें और उसका अतीतकालीन गौरवशाली ऐश्वर्य फिर से लौंट आये।

तृतीय अध्याय 'भारत-दुर्दशा' नाटक में 'राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश' इसे स्पष्ट करके देश की जो राष्ट्रीय स्तर पर दुर्दशा हुई थी, उसे भारतेन्दु ने बड़ी ही सजीवता से चित्रित किया है। भारतेन्दु-युग सामाजिक दृष्टि से दुर्बलता का युग रहा। पुरानी रूढ़ियाँ और परम्पराएँ सामाजिक जीवन की प्रगति में बाधा बन रहीं थी। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैश्विक स्तर पर समाजसुधार के प्रयत्न हो रहे थे। सामाजिक स्तर गिर गया था। तत्कालीन समाज के कर्णधार समझे जानेवाले ब्राह्मण भी अपने मूल उद्देश्य से भटककर लोभ और लालच में फँसकर धर्माड़म्बर कर रहे थे। इस समय समाज में हिन्दुओं की संख्या अधिक थी, और वहीं मत-मतान्तरों में और अंधश्रद्धाओं में फँसे हुए थे। अंग्रेजों ने भारत की इन्हीं कमजोरियों को जानकर 'फोडो और शासन करों' की नीति को अपनाया था। उन्होंने भूखमरी, महँगाई, अतिवृष्टि, अनावृष्टि से जूझनेवाले भारतियों पर दुगना टैक्स लगाकर उन्हें कौड़ी-कौड़ी को मुहताज किया था। अपनी शासननीति व व्यापारनीति से भारत का मानसिक-आर्थिक शोषण किया था। इन बिकट परिस्थितियों में अंग्रेजी साम्राज्य, उनकी शोषण नीति और उनके इन कुकर्मो का साथ देनेवालें शासकों और समर्थकों के प्रति क्षोभ व्यक्त कर भारतेन्दु ने लोगों में नवजागृति लाने का स्तुत्य प्रयत्न किया।

भारतेन्दु ने 'अंधेरनगरी' प्रहसन के माध्यम से भी राष्ट्रीय नवजागरण के परिवेश को विश्लेषण करने का सफल प्रयास किया है। जिसमें देशी राजाओं की अंधी न्यायप्रणाली को स्पष्ट किया है। जहाँ धर्म, बुद्धि और नैतिक मूल्यों का हास होता है, वहाँ के राजा का अन्त वही होता है जो 'अंधेरनगरी' प्रहसन के राजा का हुआ है। 'धर्म' के पवित्र अर्थ को भूलकर ब्राह्मण लोभ और लालच के जाल में फँसकर टके के लिए अपनी जात बेचने के लिए तैयार है। समाज में लोगों को राजा की अंधी न्यायप्रणाली के कारण अन्यायो और अत्याचारों को सहना पड़ता है। महाजन, साहूकार, व्यापारी और पुलिस, लाला लोग मिलकर सामान्य जनता पर दुगुना टैक्स लगाकर उन्हें लूटते हैं। सभ्यता और संस्कृति की भी हीन अवस्था हुई थी। ऐसी दुर्दशा के दिनों में भारतेन्दु जी ने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों में नवजागृति निर्माण करके देश की स्थिति सुधारने के लिए उनमें आत्मविश्वास और देश प्रेम की भावना जगायी।

अत: मैं इस निष्कर्ष तक पहुँची हूँ कि, भारतेन्दु जी ने विवेच्य नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश निर्माण करके इन नाटकों के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक अन्तर्विरोधों की गतिशील चेतना को अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। जिससे समाज अपनी धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर दुर्दशा हो रही थी उसे दूर करने के लिए अंग्रेजों की शोषित शासनव्यवस्था को समूलता से नष्ट करें। भारतेन्दु जी ने देश के सामान्य लोगों में अपने देश की इस दुर्दशा की वास्तविकता उनके मन और बुद्धि में बिंबित करके उनके मन में सोई हुई देशप्रेम और देशभक्ति की भावना जागृत करके नवजागरण की चेतना निर्माण करने का महान कार्य किया है।

चतुर्थ अध्याय 'भारत -दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय नवजागरण चेतना' के अंतर्गत भारतेंन्दु ने विवेच्य नाटकों के माध्यम से भारत की जनता अंग्रेजों दवारा अन्याय, अत्याचार को सहकर किस प्रकार लाचार, उपेक्षित जीवन जी रही थी उसका सजीव चित्रण करके लोगों की कायरता पर क्षोभ व्यक्त किया

है। किसी को अपने देश की इस बुरी स्थिति पर अफसोस नहीं था। बल्कि अंग्रेजों के अन्यायों और अत्याचारों को सहकर वे अपनी प्रगति के लिए अंग्रेजी शासन से आस लगाए बैठे थे। उनकी इसी मानसिकता पर उन्होंने क्रोध व्यक्त किया है। ऐसी स्थिति में भारतेन्दु ने ऐसे समाज में 'देशप्रेम' की भावना जगाकर उनमें वह राष्ट्रीय चेतना निर्माण की, जिससे समाज परतंत्रता की बेड़ियों से भारत को स्वतंत्र कर सकें।

राष्ट्रीय चेतना का लक्ष्य - 'स्वतंत्रता की प्राप्ति अर्थात पराधीनता से मुक्ति।' लेकिन भारतेन्दु कालीन समाज तो पराधीनता की बेड़ियों में ऐसा जकड़ा हुआ था कि, उसे आजाद होने का कोई मार्ग नजर नहीं आ रहा था, न उनमें उतना आत्मविश्वास था कि, उन बेड़ियों को तोड़कर स्वयं को तथा अपने देश को स्वतंत्र कर सकें।

भारतेन्दु काल में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक ढ़ाँचा बिल्कुल ध्वस्त हो गया था। सभी क्षेत्रों में विषमता फैल गई थी। आंतरिक फूट, कलह, लोभ-लालच आदि से देश पतनावस्था की ओर झुक रहा था। अंग्रेजों ने देश पर वर्चस्व स्थापित करके उसका सभी तरह से शोषण किया था। देश के लोगों में जो एकता का अभाव था, उसी कमजोरी का सहारा लेकर उन्होंने 'फूट डालों, शासन करों।' की नीति अपनाकर देश की संस्कृति, सभ्यता और वैभव को लुटकर सभी ओर अनाचार, व्यभिचार, अनैतिकता को फैलाया था।

भारतेन्दु ने अंग्रेजी की इसी कूटनीति को समझकर भारतवासियों में राष्ट्रप्रेम व राष्ट्रभक्ति की चेतना जागृत करने हेतु इन नाटकों का सृजन किया। राष्ट्र के प्रति अपने इसी दायित्व को उन्होंने बखूबी निभाया। देश में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, अंधविश्वास, भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था, पराधीनता और अशिक्षा आदि विषम असंगत कर्तव्यों के प्रति सजग किया। अतीत के गौरवशाली इतिहास की याद दिलाकर लोगों में सोई हुई राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना जागृत की। विवेच्य दोनों नाटकों के कथ्य चाहे अलग है लेकिन राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना की आत्मा एक ही

है। दोनों ही नाटकों का एक ही उद्देश्य है - "भारतीय जनता में प्रखर राष्ट्रनिष्ठा व ज्वाज्वल्य देशाभिमान जागृत करना" यह स्पष्ट होता है।

पंचम अध्याय "राष्ट्रीय नवजागरण चेतना में भारतेन्दु का योगदान" इसमें भारतेन्दु जी के नवजागरण के कार्य को विविध पहलुओं से स्पष्ट किया है। राष्ट्रव्यापी 'राष्ट्रीय नवजागरण चेतना के निर्माण' की नींव डालने का महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने किया था। भारतेन्दु जी ने अपने नाटकों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक आदि अनेकविध क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों को स्पष्ट किया था। उनका साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश उस समय हुआ था, जब जनसामान्य अनेक विषमताओं और विसंगतियों में कष्टमय जीवन बीता रहा था। उन्हें अपनी प्रगति की कोई आशा नहीं दिखाई दे रही थी। धर्म, शिक्षा और समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, अंधविश्वास, विपन्नता, निर्धनता, भूखमरी, पराधीनता और अशिक्षा के कारण देश की संस्कृति और सभ्यता की अवहेलना हो चुकी थी। भारतेन्दु जी ने देश की इसी दुर्दिनता में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना फैलाकर अपने अतीत के गौरव को वापस लौंटाने का प्रयत्न किया। अंग्रेज राजभक्त परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने अपना मान-अपमान, धन संपत्ति और अपने जीवन की परवाह किए बिना स्वतंत्रता के इस आंदोलन में साहित्यरूपी शस्त्र से अपना क्षोभ व आक्रोश व्यक्त किया है। पराधीनता के उस युग में अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने जो देशव्यापी 'राष्ट्रीय नवजागरण' की चेतना जागृत के लिए जो योगदान दिया वह अत्यंत प्रशंसनीय हैं।

विवेच्य नाटकों से प्राप्त उपलब्धियाँ :

1. भारतेन्दु जी के 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' यह नाटक देश में राष्ट्रीय नवजागरण चेतना जागृत करने के अपने उद्देश्य को साकार करने में निश्चित ही सफल रहे हैं।
2. भारतेन्दु जी का 'भारत दुर्दशा' पहला नाटक है जिसमें राजनैतिक विषय को आधार बनाकर भारतीय परवशता की दयनीयता उद्घाटित की है तथा

'अंधेरनगरी' नाटक में प्रतीक कथा के माध्यम से शासन की निरंकुश अंधेरगर्दी व मूर्खता, लोभ, विवेकहीनता, अंधी शासन प्रणाली पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। दोनों भी नाटकों का कथ्य देशवासियों में राष्ट्रीय अस्मिता व ज्वाज्वल्य देशाभिमान जागृत करने में सफल हुए है यह दोनों विवेचित नाटकों की विशेषताएँ हैं।

3. 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' इन दो नाटकों में पराधीन भारत की पराधनीता का दयनीय एवं सजीव चित्रण प्रतीक पात्रों के माध्यम से किया है, वह भारतेन्दु की अपनी मौलिकता है और 'अंधेरनगरी' नाटक में तत्कालीन अमानवीय, अराजक और अंधाधुंद शासन प्रणाली पर व्यंग्योक्तियों से ब्रिटिश शासन प्रणाली पर कड़ा व्यंग्य करता है यह उनके दूसरे नाटक की मौलिकता है। दोनों नाटकों का मूल तत्व निष्क्रिय, उदासीन, गुलाम, देशप्रेमहीन देश की जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करना यह है।

4. 'भारत दुर्दशा' नाटक में राजनैतिक संघर्ष की विफलता का वास्तववादी, यथार्थ रूप से वर्णन किया है और 'अंधेरनगरी' नाटक के माध्यम से अंधी न्यायप्रणाली और भ्रष्ट शासन व्यवस्था को कुशल बुद्धिचातुर्थ से खत्म किया जा जा सकता है इसे स्पष्ट किया गया है। तात्पर्य दोनों नाटक अपने राजनैतिक संघर्ष से समाज को अंतर्मुख करने के लिए बाध्य करते है।

5. विवेच्य दोनों नाटकों में धार्मिक पाखण्डता का चित्रण व्यंग्योक्तियों से करते हुए अंधविश्वास, अज्ञान, अशिक्षा, धर्माडम्बर आदि कारणों से तथा आर्थिक कठिनाइयाँ और ब्राह्मणों के दवारा नैतिक मूल्यों के पतन से 'धर्म' किस प्रकार पथभ्रष्ट हुआ है इसका वर्णन किया गया है।

6. विवेच्य दोनों नाटक 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में व्याप्त विविध विसंगतियाँ और समस्याएँ इनके कारण उन सभी क्षेत्रों का ढाँचा ध्वस्त हो गया और समाज के लोग किस प्रकार

निष्क्रिय हो नए थे एवं अस्तित्वहीन जीवन व्यतीत कर रहे थे इसका वर्णन करने में भारतेन्दु सफल हुए है।

7. पराधीनता के उस युग में विवेच्य नाटकों के माध्यम से जागृत की हुई राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना जनमानस में ज्वाज्वल्य देशाभिमान और उत्कट देशप्रेम की भावना प्रेरित करने में निश्चित सफल रहे होंगे।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में चित्रित पुरूष जीवन।
2. मंचियता की दृष्टि से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक ।
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में चित्रित राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण ।
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों (' भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी') का अनुशीलन ।
5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में वर्णित राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश।
6. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में चित्रित धार्मिक बाहयाडंबर।
7. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में चित्रित, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना।

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त विषय मेरे सामने उभर कर आए हैं। उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। मुझे आशा है कल आनेवाले शोधकर्ता उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य संपन्न क सकते हैं।

* * * * * * * * * * * *